B.A. III Hy
V Paper

कम्बुज-चम्पा संघर्ष

Combodiya- champa struggle

कम्बुज - चम्पा के आपसी लम्बी दिनों तक संघर्ष की जानकारी चम्पा के अभिलेखों से प्राप्त होती है। जयइन्द्रवर्मा सप्तम के शासन काल से ही कम्बुज से संघर्ष का सिलसिला प्रारम्भ हो गया अर्थात् जयइन्द्रवर्मा के शासन काल में अनेक युद्धों में फँसना पड़ा। उस समय 1113 ई० में कम्बुज के सिंहासन पर सूर्यवर्मा शासन कर रहा था। जो कि बड़ा वीर प्रतापी और महत्वाकांक्षी राजा था। वह पड़ोस के राज्यों को जीतकर अपने राज्य के विस्तार के लिए प्रयत्नशील रहा।

कम्बुज राजा सूर्यवर्मा ने 1128, 1132, 1137 तीन बार लगातार अनाम पर आक्रमण किया परन्तु सूर्यवर्मा को असफलता ही मिला। अनाम पर आक्रमण हेतु सूर्यवर्मा ने चम्पा से मदद मांगा था लेकिन चम्पा राजा ने मदद करने से इनकार कर दिया। सूर्यवर्मा ने रुष्ट होकर चम्पा पर आक्रमण कर दिया। सूर्यवर्मा, चम्पा अन्य भागों पर आक्रमण कर अपने अधिकार में कर लिया। 1145 ई० में जयइन्द्रवर्मा सप्तम सम्भवतः युद्ध में मारा गया था कैद कर लिया गया। लेकिन यह निश्चित है कि 1145 ई० में उस राजा का अन्त हो गया।

कम्बुराज सूर्यवर्मा के बार-बार आक्रमण से चम्पा की राजशक्ति पुनः अस्त-व्यस्त हो गयी थी। इस स्थिति राजा परमबोधिसत्व के वंशज रुद्रवर्मा परमब्रह्मलोक ने अपने को राजा घोषित कर दिया और पाण्डुरंग को केन्द्र बनाकर उसने चम्पा के शासन को संभालने का प्रयास किया, परन्तु 1147 ई० में उनकी मृत्यु हो गई।

रुद्रवर्मा के मृत्यु के बाद उसका पुत्र जयहरिवर्मदेव चम्पा के सिंहासन पर आसीन हुआ। उस समय चम्पा में चारो तरफ से संकट की काली बादल घिर रही थी। कम्बुज के साथ ही अनाम भी चम्पा पर आक्रमण कर दिया, लेकिन जयहरिवर्मदेव नहीं घबराया नहीं बल्कि वीरता के साथ शत्रुओं का सामना किया और सभी को परास्त करने में सफलता प्राप्त की। कम्बुज के लगातार आक्रमण से चम्पा राजा जयहरिवर्मदेव ने घबराया नहीं, बल्कि कम्बुज के सेनाओं को घेर

Scanned with CamScanner

पराजित किया।

इस प्रकार कम्बुज की तरफ से चम्पा पर कई बार आक्रमण किये गए लेकिन रणक्षेत्र में उन्हें असफलता ही मिला। कम्बुज के अलावे किरातों और चम्पा से भी युद्ध हुआ जिसमें चम्पा की जीत और किरातों की भयंकर हार हुई। बाह्य शत्रुओं को पराजित करने में जयहरिवर्मदेव को अनुपम सफलता प्राप्त हुई। चम्पा की इस बढ़ती हुई शक्ति को देख कर अनाम शासक चिन्तित हो उठे। चम्पा को पराजित करने के लिए अनाम के तरफ से चम्पा पर लाखों सैनिकों द्वारा आक्रमण किया गया लेकिन अनाम सफल नहीं हो सके। चम्पा के कुछ सामन्त स्वतंत्रता पूर्वक चम्पा पर शासन करना चाहते थे। 1151 ई० में अमरावती और 1155 ई० में पाण्डुरंग में जयहरिवर्मदेव के विरुद्ध विद्रोह प्रारम्भ हो गया लेकिन जयहरिवर्मदेव ने उसे पूर्ण सफलता प्राप्त कर चम्पा में एकछत्र राजा बन गया। ऐसा एक अभिलेख से जानकारी मिलता है कि देश में शान्ति तथा व्यवस्था स्थापित कर जयहरिवर्मदेव ने ध्वस्त मन्दिरों के जीर्णोद्धार तथा उजड़ी हुई नगरियों को बसाने पर ध्यान दिया। इस महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने के लिए वह अधिक दिनों तक जीवित नहीं रह सका। 1162 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। चम्पा के राजाओं में जयहरिवर्मदेव प्रथम का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह परम प्रतापी और सुयोग्य शासक था।

1162 ई० में जयहरिवर्मदेव की मृत्यु के बाद उसका पुत्र जयहरिवर्मदेव सप्तम चम्पा के राजसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। दो अभिलेखों में उसका वर्णन मिलता था। जयइन्द्रवर्मा ज्यादा दिनों तक शासन सूत्र संचालित करने में असमर्थ रहा। 1163 ई० में चम्पा का राज्य जयइन्द्रवर्मा सप्तम के हाथों में आ गया। वह अवैध रूप से चम्पा का राज्य प्राप्त करने के पश्चात् के सम्राट की सद्भावना प्राप्त करने का प्रयास किया। जयइन्द्रवर्मा सप्तम को अपने बाहुबल पर भरोसा था और चम्पा में उसकी स्थिति पूर्णतया सदृढ़ थी। 1170 ई० में उसने कम्बुज पर आक्रमण कर दिया। जब जयइन्द्रवर्मा सप्तम के शासनकाल में यह चम्पा शक्ति और उन्नति के चरम-सीमा पर पहुँच गया। यह शक्ति

Scanned with CamScanner

जयइन्द्रवर्मा के समय में और चम्पा की शक्ति और बढ़ गई। जयइन्द्रवर्मा सप्तम के अनेक अभिलेख मिले हैं, जिनमें उसके द्वारा किये गए दान-पुण्य का उल्लेख मिलता है। माइसोन के एक अभिलेख में उस राजा को व्याकरण ज्योतिष, एवं अन्य सभी शास्त्रों का पारंगत पंडित कहा गया है।

1181 ई० में- कम्बुज शासक- जयवर्मा सप्तम ने चम्पा के विरुद्ध संघर्ष को जारी रखा। और जयइन्द्रवर्मा की सेनाओं को कम्बुज छोड़कर चले जाने के लिए विवश किया। कम्बुज के राजनीतिक ग्रन्थ इतिहासों से जानकारी मिलती है कि जयइन्द्रवर्मा को पराजित कर बन्दी बना कर कम्बुज लाई गई।

चम्पा के दक्षिणी भागों के देख-रेख एवं शासन करने के लिए श्रीसूर्यवर्मदेव को नियुक्त किया गया। जिन्हें शासन करने में अच्छी सफलता हुई। उत्तरी चम्पा के सामन्त रघुपति नाम के व्यक्ति ने- सूर्यवर्मदेव के विरुद्ध विद्रोह कर जयइन्द्रवर्मदेव के नाम से अपने को राजा घोषित कर दिया। श्रीसूर्यवर्मदेव शान्तिपूर्वक चम्पा का शासन नहीं कर सका।

जयपरमेश्वरवर्मा चम्पा के पुराने- राजकुल में उत्पन्न हुआ था। वह राजा जयहरिवर्मदेव सप्तम का पुत्र था, उसके पश्चात चम्पा पर उसी का अधिकार था। 1163 ई० में जब श्री जयइन्द्रवर्मा ने चम्पा पर अधिकार कर लिया था तो उस समय जयपरमेश्वरवर्मा अपने देश छोड़कर अन्यत्र प्रवास के लिए विवश हो गया। उसने अन्य स्थानों को छोड़कर कम्बुज जाकर आश्रय ग्रहण किया। कम्बुज के राजा जयवर्मा सप्तम को 'युवराज' की पदवी से विभूषित कर अपने राज्य में उच्च स्थान प्रदान किया। अनाम के युद्धों के कारण जब कम्बुज की शक्ति क्षीण हो गई, और उसके लिए अन्य देशों को अपने अधीन रख सकना कठिन हो गया तो जयपरमेश्वर वर्मा ने- इस दशा से लाभ उठाया और चम्पा के- राजसिंहासन को अधिगत कर लिया। चम्पा का राजा बनकर शान्तिपूर्वक शासन का संचालन किया। इस राजा के अनेक अभिलेख उपलब्ध हुए हैं जिनमें विविध देवी- देवताओं की मूर्तियों को प्रतिष्ठापित करने तथा मन्दिरों में दान देने का उल्लेख है।

Scanned with CamScanner

~~[struck out]~~ जयपरमेश्वरवर्मा चतुर्थ के पश्चात्

उसका छोटा भाई जयइन्द्रवर्मा चम्पा के राजसिंहासन पर आसीन हुआ। उसने 1243 ई० से लगभग राजा का पद प्राप्त किया था। इस काल में चम्पा के बहुत से साहसी व्यक्ति नौकाओं द्वारा अनाम के समुद्रतट पर बहुधा लूटमार करते रहते थे। अनाम के राजा ने इस बात की ओर जयइन्द्रवर्मा का ध्यान आकृष्ट किया और उसने लूटमार को बन्द करवाने का प्रयास किया।

1257 ई० में जयइन्द्रवर्मा के भानजे जयसिंहवर्मा ने अपने मामा की हत्या कर दी और राजसिंहासन को अधिकृत कर इन्द्रवर्मा के नाम से अपना राज्याभिषेक कराया। जयसिंहवर्मा शान्तिपूर्वक जीवन बिताना चाहता था। इसलिए उसने अनाम और चीन के साथ मैत्री-सम्बन्ध स्थापित किया।

उपर्युक्त विवरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि चम्पा-किम्बुज में बहुत लम्बे समय तक संघर्ष चलता रहा, जिसमें सम्बन्ध राजाओं के अभिलेखों में वर्णित मिलता है इन दोनों देशों के आपसी संघर्ष के पश्चात् बहुत क्षति का सामना करना पड़ा। ~~[struck out]~~ अन्ततोगत्वा मैत्री सम्बन्धों का सहारा लेकर युद्ध को विराम करना पड़ा।

Scanned with CamScanner